SUNDAY | 28.02.2021

उत्तर प्रदेश

अमर उजाला

PAGE NO 12 : TOP RIGHT

वसंतोत्सव.. सुर, ताल और नृत्य का संगम

नृत्य और संगीत की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को बांधा

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली। एसआरएमएस के सांस्कृतिक केंद्र रिद्धिमा में शनिवार शाम को आयोजित वसंतोत्सव में सुर और संगीत की पहली महफिल सजी। नृत्य और संगीत की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने दर्शकों को बांधे रखा।

दीप प्रज्ज्वलन के बाद डॉ. ऊषा तिवारी ने अपनी शिष्याओं के साथ सरस्वती वंदना, या कुंदेंदु तुषार हार धवला.. की प्रस्तुति दी। गायिका इंदु इंदुपरडल ने, सुनो सजना पपीहे ने.. गीत की प्रस्तुति दी और फिर डॉ. अंबाली महाराज एवं डॉ. पंकज शर्मा ने भरतनाट्यम की प्रस्तुति दी।

लागा चुनरी में दाग.. गीत पर हुई भरतनाट्यम की प्रस्तुति पर दर्शकों ने खूब तालियां बजाईं। आनंद मिश्रा और शिव शंभू कपूर ने तलबा एवं हारमोनियम के जरिये बनारस घराने की संस्कृति से परिचय कराया। इसके बाद दिल्ली से आए वासु कृष्ण महाराज और वैभव कृष्ण महाराज ने कथक की प्रस्तुति दी। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति ने देर तक दर्शकों को बांधे रखा। अमृत मिश्रा एवं डॉ. पंकज शर्मा ने भी कथक पर प्रस्तुति दी।

संचालन डॉ. कविता अरोरा ने किया। बनारस घराने की श्वेता चौधरी ने होली गीत, खेलत है गिरधारी.. पर भरतनाट्यम की प्रस्तुति देकर होली की याद दिला दी। इससे पूर्व राममूर्ति स्मारक ट्रस्ट के चेयरमैन देवमूर्ति और सचिव अदितमूर्ति ने दो दिवसीय कला प्रदर्शनी के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इसमें अंशिका अग्रवाल और वानी शुक्ला प्रथम रहीं।

रिद्धिमा में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुति देते कलाकार। अमर उजाला

बनारस घराने की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं 14वीं पीढ़ी के बासु और वैभव

पांचवीं के बाद पढ़ाई छोड़कर सीखा कथक, बोले- सरकार को इसे बढ़ावा देने की जरूरत

बरेली। बनारस घराने की परंपरा आगे बढ़ा रहे 14वीं पीढ़ी के बासु कृष्ण महाराज और वैभव कृष्ण महाराज पांचवीं कक्षा की पढ़ाई के बाद ही कथक सीखने लगे थे। उनका कहना है कि सरकार को अपनी सांस्कृतिक विरासत बचाने के लिए इसे बढ़ावा देने की जरूरत है।

बासु और वैभव कृष्ण महाराज शनिवार को रिद्धिमा में आयोजित बसंतोत्सव कार्यक्रम में प्रस्तुति देने पहुंचे थे। अमर उजाला से बातचीत में बासु और वैभव ने बताया कि वे दोनों सगे भाई हैं और बनारस घराने की 14वीं पीढ़ी हैं। 13वीं पीढ़ी के अशोक कृष्ण महाराज उनके ताऊ हैं, जिनके सानिध्य में वे कथक कला को आगे बढ़ा रहे हैं। पांचवीं तक पढ़ाई के बाद ही पिता और ताऊ ने उन्हें कथक में पारंगत करने का निर्णय लिया और फिर उन लोगों ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने कहा कि नृत्य अब शौक बन गया है, जिसके चलते युवाओं में सीखने की ललक कम दिखाई देती है।

सरकार को इसे प्रोत्साहन देने के लिए लगातार आयोजन कराने चाहिए ताकि युवा अपनी संस्कृति से जुड़ाव महसूस करें। कहा, सोशल मीडिया भी कलाओं को अनदेखी कर रहा है। तमाम एप चल रहे हैं, जिन पर नृत्य के वीडियो बनाकर युवा पोस्ट करते हैं लेकिन ये सिर्फ 30 सेकेंड का होता है और इतने समय में तो सुर, लय, ताल ही ठीक से नहीं मिल पाते। ब्यूरो

अपने ताऊ के साथ बासु और वैभव कृष्ण महाराज।